पहला अध्याय

नारी जागरण : बदलते परिवेश

भारत के अर्द्ध नारीश्वर परिकल्पना के अनुसार सृष्टिकर्ता ने अपने शरीर के दो भागों को स्त्री और पुरूष की संज्ञा दी है।प्रस्तुत ख्याल के अनुसार स्त्री -पुरूष एकसमान और परस्पर पूरक है।स्त्री के बिना पुरूष का या पुरूष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। स्त्री, स्वदेह तथा सन्तान ये तीन मिलकर पुरूष पूर्ण होता है। किसी एक के बिना मनुष्य शरीर अपूर्ण है ।जो पति है, वह पत्नी है। यही भारतीय नारी का स्वरूप है।

प्राचीन भारतीय समाज में नारी की स्थिती

शतपथ ब्राहमण में कहा जाता है कि पत्नी पुरूष की आत्मा का आधा भाग है। महाभारत में लिखा है कि भार्या मनुष्य का आधा भाग है तथा श्रेष्ठतम मित्र भी है।स्त्री -पुरूष तथा सन्तानें मिलकर मनुष्य पूर्ण होता है।इससे स्पष्ट है कि पुरूष के मन में अधिकार के भाव जाग्रत नहीं हो सकते, क्योंकि वह जानता है कि स्त्री अपना ही आधा भाग है और शरीर के दोनों भाग का अपना -अपना महत्व है।मनुस्मृति के रचयिता मनु ने नारी की अभ्यर्थन 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' कहकर की है।इन उक्तियों से स्पष्ट हो जाता है की प्राचीन भारतीय समाज ने नारी को उच्च और उचित स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।पर दूसरी ओर

" पिता रक्षति कौमारे ,भर्ता रक्षति यौवने।।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा. न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।।"[1]

कहकर नारी की अस्मिता पर प्रतिबन्ध लगाकर उसे अबला और आश्रिता बना दिया।

भारतीय धर्मशास्त्र में नारी मानवता के आदर्श और निर्मलता के जीवंत रूप ही रही है।मातृसत्तात्मक भारतीय परिकल्पना के अनुसार विद्या का आदर्श सरस्वती, धन का लक्ष्मी, पराक्रम का दुर्गा, सौन्दर्य का रति, पवित्रता क ा गंगा, ईश्वर का जगत जननी प्रतीक माना जाता है।प्रस्तुत युग का एतवार था कि नारी का सम्मान ही परिवार और समाज का कल्याण का कारण है। अर्द्धांगिंनी का स्थान पाकर पुरूषों के समान अधिकार और प्रत्येक कार्य में सहधर्मिणी की

---

1 मनुस्मृति :सं. गंगानाथ झा,पृ. **242**

भूमिका निभाने में नारी सक्षम थी। " दुनिया बनने के साथ ही स्त्रियों की महत्वपूर्ण भागीदारी इस दुनिया और समाज में थी।भारतीय ही नहीं विश्व समाज में भी स्त्रियॉं ही कबीले और घर की मालकिन हुआ करती थीं।मातृसत्तात्मक समाज था।स्त्री शरीर को रहस्य और उर्वरा मानकर धरती से उसकी तुलना की जाती थी।वह पुरूष शरीर की जननी ही नहीं उस शरीर की मालकिन भी हुआ करती थी।"[2] जब से हम भारतीयों ने धर्म का आधार छोड़कर मनमाने ठंग से जीवन बिताना शूरू कर दिया तभी से हमारा पतन भी शुरू हो गया।आगे चलकर पुरूष ने नारी को समान स्थान, अधिकार और सम्मान देने केलिए झिझक दिखाना शुरू किया। इसके अलावा, स्त्री को अपने लिए प्रतिद्वंद्वि और खतरा भी माना गया। "पुरूष ने अपनी सकल प्रभुसत्ता केलिए स्त्री को खतरा माना और उसकी सत्ता को घर की चार -दीवारी में जकड़ दिया गया।औरत ने कभी स्वतंत्र रूप से अपना संगठन नहीं बनाया, कभी स्वयं को स्वतंत्र जति के रूप में नहीं देखा, न ही कोई उसका जातीय इतिहास ही रचा गया।चाहे राजनीतिक क्रान्ती हो, चाहे अर्थक्रान्ती हो, चाहे सामाजिक शोषण के खिलाफ संघर्ष की भूमिका हो, स्त्री की स्थिती सदा नगण्य रही।"[3] बाद में पुरूष ने नारी को कुचलकर अपना अधिकार प्रामाणित करने का दुस्साहस भी किया।नारी तो अपने को अबला मानकर केवल दासी और सेविका के रूप धारण करने केलिए तैयार हो गयी ।परिणामस्वरूप जिन्दगी भर वह पुरूष की आश्रिता बन गयी। "पैदा होती है तो पिता की छत के नीचे एक परायी धरोहर की तरह ,युवा होती है तो पति के घर एक सेविका की तरह और जब बूढ़ी होती है तो बेटे की छत के नीचे एक अनुपयोगी वस्तु की तरह।इस प्रकार पिता,पति और पुत्र की छाया तले उसे अपना घर कल्पित करना पड़ता है।"[4]

---

2 आजकल : मार्च **2008,** पृ. **31 -32**

3 मधुमती : फरवरी **1996,** पृ. **78**।

4 आठवें दशक की हिन्दी कहानी : डॉ. मधु सिंह, पृ. **149**।

वैदिक युग में नारी का स्थान

वैदिक काल में बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास अपनी चरम सीमा पर पहूँचता था।प्रस्तुत युग में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित थी जिसमें स्त्री गृहिणी, माता तथा सहचरी पद पर सुशोभित थी।इसके साथ वह परिवार के बाहर भी अपना अधिकार रखती थी।स्त्री को पुरूषों की भॉती सभी स्तरों में समान अधिकार प्राप्त थे।प्रस्तुत युग में स्त्रियॉ विद्याध्ययन, और विवाह के क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्र थी। ''प्रारंभिक वैदिक युग में स्त्रियॉ 'ब्रह्मवादिनियॉ' बन सकती थीं, ऋचाओं की रचना कर सकती थीं, उनका 'उपनयन' संस्कार भी होता था और वे अपने घर के अन्य पुरूषों के समकक्ष ही यज्ञ, हवन, अग्निहोत्र में सहभागी होती थीं।वैदिक युग में स्त्रियों को सार्वजनिक क्षेत्र में विचरण की स्वतंत्रता थी।ब्रह्मवादिनी गार्गी का ऋषि याज्ञवल्क्य से खुले राजदरबार में किया गया शास्त्रार्थ इसी सामाजिक स्थिति का द्योतक है।निश्चित ही पुत्र की अपेक्षा पुत्री को ही गृहोपयोगी कला -कौशल में ज्यादा दीक्षित किया जाता था।इन सबसे यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लड़की का विवाह सोलह अठारह वर्ष के बीच किया जाताा होगा और वर की पसंदगी में उनकी अपनी राय या सहमती को भी ध्यान में रखा जाता होगा।"[5] वह अपने पति के धार्मिक कृत्यों में सहयोग देती थी।इस से स्पष्ट है कि वैदिक युग में सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्र में नारी को उचित स्थान प्राप्त था और सभी क्षेत्रों में पूर्ण अधिकार भी प्राप्त थे।संक्षेप में, वैदिक युग का इतिहास नारी के समानाधिकारों का इतिहास है। "वैदिक काल में स्त्रियॉ पुरूष की तरह ही स्वाधीन और अपनी मौलिकताओं को विकसित करने केलिए स्वतंत्र थी।" [6]

---

5 गांधीयुगीन नारी जागरण और हिन्दी उपन्यास : डॉ. राजम नटराजन पिल्लै, पृ. 5

6 आजकल : मई 2002, पृ. 17

साहित्य में भी उसका स्थान प्रौढ गंभीर था।इस काल में वर्णित नारी सौन्दर्य का एक चित्र देखिए :

" मनहूँ कला ससिभांन, कला सोलह सो बन्निय।
बाल बेमि ससिता समीप, अमभ्रित रस पिन्निय।।
बिगंमि कमल भ्रिग भ्रमर, बैन वंजन मृग लुटिट्य।
हीर कीर अरू बिंब, मोती नष सिष अहि घुटिट्य।।" [7]

उत्तर वैदिक युग में नारी का रूप

उत्तर वैदिक काल में पुरूष ने स्वेच्छा से नये -नये नियमों का निर्माण किया। इस काल में नारी पर सामाजिक, बौद्धिक, धार्मिक, शैक्षिक और पारिवारिक बन्धन शुरू कर दिया ।आगे -आगे उसकी विवशता और असहायता बढ़ने लगी।घर के अंदर और बाहर नारी की गरिमा का पतन यहीं से आरंभ हुआ। जडिलता के आधिक्य के कारण वे धार्मिक कर्ममण्ड़लों में प्रवेश नहीं कर पाती थीं और न वे पतियों के साथ यज्ञ में सम्मिलित हो सकती थीं।शिक्षा के क्षेत्र में कन्याओं की शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था। "शूद्रों एवं नारियों को संस्कृत भाषा पढ़ने और बोलने की स्वतंत्रता नहीं थी।"[8]

उन दिनों में लड़की का जन्म ही अशुभ माना जाता था और वह परिवार केलिए बोझ भी बन गयी। विवाह के नियम कठोर हो गए थे ।वैवाहिक स्वतंत्रता समाप्त हो गयी थी।इसके फलस्वरूप बाल विवाह और बहू विवाह प्रथा शुरू हो गया था। "ऋग्वैदिक काल के बाद का काल स्त्री के अधिकार की दृष्टि से पतन का काल दिखायी पड़ता है।इस काल में जहाँ

---

7 चन्दरबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो का रेवातट समय सटीक : प्रो. देशराजसिंह भाटो,पृ. 91।
8 ताप्तीलोक : अप्रैल 2006, पृ. 17।

पर सामाजिक एवं आर्थिक विकास को एक नयी दिशा मिल रही थी वहीं पर स्त्रियों के अधिकार सीमित कर दिये गये।सभा समिति जैसी महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थाओं में उनके प्रवेश पर रोक लगा दी गयी।स्त्री के धर्मसंबन्धी अधिकार भी समाप्त कर दिये गये।वर्ण व्यवस्था ने जन्मगत् आधार प्राप्त कर लिया।जहॉ पर पूर्व वैदिक काल में स्त्रियों को पति की स्वामिनी कहा गया वहीं पर उत्तर वैदिक काल में पुरूष भी भारतीय समाज का नियन्ता माना जाने लगा।"[9]

बौद्व युग में

बौद्व काल में सामाजिक जीवन में नारी का और अधिक पतन हुआ।इस काल में नारी अपनी वैदिक युग की गरिमा खोकर केवल भोग विलास की वस्तु समझी जाने लगी।यहॉ तक कि लंबे समय तक महात्मा बुद्व ने संघ में नारी को प्रवेश की अनुमति निषेध किया पर यह नियम अधिक कठोर नहीं था।"संघ में स्त्रियों के प्रवेश के प्रतिकूल प्रभाव को रोकने केलिए उनके ऊपर आठ महत्वपूर्ण शर्तें लगा दी गयीं जेा इस प्रकार हैं –

1 भिक्षुणिया श्रमणों का आदर करेंगी।

2 अभिक्षुकुल में भिक्षुणियॉ वर्षवास नहीं करेंगी।

3 प्रत्येक पखवारे भिक्षुणियों को भिक्षु संघ से उपोसथ प्राप्त करना होगा।

4 वर्षावास के अनन्तर भिक्षुणियों को दोनों संघों में दृष्ट श्रुत और परिशंकित तीनों स्थानों से प्रवाहण करनी होगी।

5 भिक्षुणियॉ दोनों संघ में पक्षमानता करेंगी।

6 दो वर्षों के अन्तर्गत छः धर्मों में शिक्षित होकर भिक्षुणी को दोनों संघों में उपसंपदा करनी पड़ेगी।

7 भिक्षुणी को आक्रोश परिभाषण नहीं करना होगा।

---

9 सम्मेलन पत्रिका, [चैत्र ज्येष्ठ : संवत् **2063**] पृ. **154**

8 भिक्षुओं के संबन्ध में कुछ कहने का मार्ग भिक्षुणियों केलिए निरूद्ध होगा।"[10]

मौर्य, गुप्त और हर्ष शासन के युग में बन्धनों के होते हुए भी समाज में नारी को स्थान मिला था।लेकिन मुसलमानों के शासन काल में नारी घर की चहारदीवारी के भीतर बंदी बनायी गयी।इन राजाओं ने नारी को केवल भोग्या समझा।अपनी सुन्दरता और कोमलता नारी केलिए अभिशाप बन गई।मुसलमानों ने इस अवसर पर जातीय सभ्यता का पर्दा नारी की जिन्दगी पर डाल दिया।पर्दा प्रथा अब भी चल रही है।सिद्धों और वज्रयानियों ने नारी को भोग और मोक्ष का साधन माना।कबीर, तुलसी आदि संत भक्त कवियों का नारी को माया ,ठगिनी तथा अवगुणों की खान कहना नारी की सामाजिक पतनोन्मुख स्थिती की और संकेत करते हैं।

"जोरू जूठणि जगत की,भले बुरे का बीच।
उत्यम ते अलग रहै, निकटि रहैं ते नीचे।।। "

"अर्थात स्त्री सारे संसार की जूठन है।इसके संबन्धों से भले और बुरे का ज्ञान होता है।जो उत्तम प्रकृति के अर्थात ज्ञानी पुरूष हैं वे इससे अलग रहते हैं, परन्तु जो नीच प्रकृति के हैं वे इनके निकट रहते हैं ।"[11]

संक्षेप में, बौद्धकाल में नारी पूर्णत: बंधनग्रस्त थी।शास्त्र में नारी के आठ अवगुण वर्णित हैं -साहस, अनृत, चपलता, माया, भय, अविवेक, अशौच और अदाया ।लोक और शास्त्र से प्रभावित तुलसीदास का नारी विषयक दृष्टिकोण भी शूद्रों की भॉति ही अनुदार माना जाता है।प्राय: उन्हें भी कवि ने शूद्र वर्ग में ही रखा है-

"ढोल गॅवर सूद्र पसु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी ।"[12]

---

10 सम्मेलन पत्रिका, [चैत्र ज्येष्ठ : संवत् 2063] पृ. 155

11 कबीर ग्रन्थावली सटीक : रामकिशोर शर्मा, पृ. 216।

12 तुलसी की साहित्य साधना : डॉ लल्लन राय, पृ. 120।

रीति काल में

इस युग में पुरूष ने नारी के अधिकारों को छीन लिया और अपने अधिकारों की सीमा के भीतर नारी को बंधनग्रस्त किया। रीतिकाल के कवि नारी का नख- शिख वर्णन करने में अधिक सक्षम दिखते हैं।

"लाजनि लपेटी चितवनी भेद भाय भरी
लसति ललित लोल चख -तिरछानी मैं।
छबि को सदन गोरो बदन, रूचिर भाल,
रस, निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।"[13]

रीतिकाल में नारी को मुगलशासकों की विलासिता के परिणामस्वरूप भोग की तुष्टि का साधन माना गया। रीतिकालीन साहित्य में नारी का कामुकतापूर्ण भोगेषण को उत्तेजित करनेवाला और विवेक को नष्ट करने वाला स्वरूप ही प्रस्तुत किया गया। रीतिकालीन नारी की गरिमा केवल रंगभवन और केलिगृह को रंग देनेवाली प्राणी की तरह सीमित हो गई थी। उसके बाह्य सौन्दर्य के अनेक रंगीन चित्र प्रस्तुत करने में कवियों द्वारा होड़ भी किए गए ।परन्तु उसके अन्दर झॉकने का साहस किसी भी कवि ने नहीं किया।

अंग्रेज़ी- शासित भारत में स्त्री की स्थिती का एक समग्र आकलन

राजाराम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर,. बेहरामजी मलबारी, जस्टिस महादेव गोविंद रानडे, स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्रीमती ऐनी बेसेन्ट,लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी जैसे अनेक महान व्यक्तियों ने नारी उत्थान के लिए, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल

---

13 घनानन्द : रीतिकाव्य संग्रह : सं. प्रोफेसर विजयपाल सिंह,पृ. **88**।

विवाह, दहेज प्रथा, बहूभार्यात्व आदि को समाप्त करने केलिए तथा विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा आदि केलिए कठोर श्रम किया और इस दिशा में सक्रिय कदम भी उठाये।इन महान व्यक्तियों के निर्देशानुसार भारत स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।शिक्षा मण्डल में होनेवाली वृद्धि ने उसमें शक्ति भर दी। वह कदम कदम पर पुरूष के साथ चली और उसने अंग्रेजों के विरूद्ध लड़कर प्रिय देश केलिए आत्मत्याग भी किया।।इसप्रकार उसने सिद्ध किया कि उसकी केवल देह नहीं बुद्धि भी है। "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान के आख्यान का आरंभ **1857** से पहले ही हो गया था।यह समय तब का है जब हमारा भारतीय समाज रूढ़िवादी परंपराओं से पूरी तरह ग्रसित था लेकिन देश प्रेम केलिए विदेशी सत्ता से टक्कर लेकर महिलाओं ने भी सर्वोपरी आत्मत्याग किया।अनगिनत महिलाओं ने अपना जीवन और अपना परिव ार और सर्वस्व देश पर न्यौछावर करके देश को गुलामी की जंजीर से मुक्ति दिलाने केलिए अपने शौर्य और त्याग द्वारा देशप्रेम का परिचय दिया।"[14]

स्वतंत्र भारत में नारी का स्थान

स्वतंत्रता एक बुनियादी मूल्य है।यह तो मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है।इसका संबन्ध व्यक्ति तथा समाज से भी होता है।इसके अन्तरगत समाज के विकास तथा जनता की सुरक्षा की भावना निहित है।व्यक्ति इसे समस्त धरातालों पर पाना चाहता है।डॉ. रमेश कुन्तल मेघ के शब्दों में "स्वतंत्रता वस्तुत: एक बुनियादी मूल्य है, जिसके आधार पर समस्त नैतिक. सांस्कृतिक और मानववादी मूल्यों की इमारत खडी है।"[15]

भारत के इतिहास में स्वतंत्रता प्राप्ति सर्वाधिक उल्लेखनीय घटना है।भारत को सन् **1947** में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई।स्वतंत्रता प्राप्ती के कारण भारत में अनेक परिवर्तन हुए।उसी के कारण नवीन सामाजिक व्यवस्था तथा विभिन्न क्षेत्रों में उमंग और उत्साह की भावना

---

14 आजकल : मई **2007,**पृ. **80**।

15क्योंकि समय एक शब्द है : डॉ. रमेश कुन्तल मेघ, पृ. **623**

ने जन्म लिया।मनुष्य के किया-कलापों का आधार भी बदल गया है।मानव के मन में नयी-नयी प्रतीक्षाएँ तथा रंगभरे स्वप्न भी अंकुरित होने लगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति भारतीय जनजीवन में समूल परिवर्तन लाया। भारत की आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक और साहित्यिक स्थिति बदली।स्वतंत्र भारत में आर्थिक प्रगति और विकास केलिए सरकार ने योजनाबद्ध कार्य किया। समग्र प्रगति के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ भी बनाई।इनमें कृषि-विकास को प्रथम स्थान दिया गया। ज़मींदारी प्रथा समाप्त कर दी गई, सहकारी संगठनों की स्थापना हुई, बैंकों का राष्ट्रीयकरण भी किया गया। इसके परिणामस्वरूप किसानों में नया उमंग आया तथा अपने अधिकारों के प्रति वे सजग भी हो गए। अपनी योजनाओं को पूरी करने के लिए भारत ने विदेशों से ऋण भी लिया। एक ओर राज्य की प्रगती केलिए अक्षीण यत्न करने पर भी दूसरी ओर राजनीतिक दलों का गठन अपनी -अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए श्रम करने लगा। नेताओं ने राष्ट्रहित की उपेक्षा कर अपने व्यक्तिगत लाभ को ही प्रथम स्थान दिया और स्वराज की स्थापना केलिए उन्होंने जो कुछ किया था उस त्याग का मूल्य वसूल करने के लिए अधिकार में उच्च पद भी माँगे। नेता लोग वोट और कुर्सी पर रूचि रखते थे।उनका लगाव अपने लिए सुविधाएँ बटोरने में लग गया। लालच, आतंक, स्वार्थ तथा झूठ चारों ओर फैला था और ईमानदारी ज़रा भी देखने का नहीं मिला। सत्य, नीति, अहिंसा आदि जीवनमूल्य तथा आदर्शवाद समाप्त हो चुका था और अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, स्वार्थ भावनायें आदि ने उसका स्थान प्राप्त किया।

देश विभाजन, जातीय दंगे, चीन और पाकिस्तान के आक्रमण, **1965** का अकाल सूखा, सांप्रदायिक भेदभाव, नारी शोषण, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, गरीबी, बेकारी, अनुशासनहीनता, अर्थाभाव से उत्पन्न असुरक्षा का भाव आदि से मानवीय मूल्यों का महत्व घट गया। इसके अलावा राज्य में आर्थिक क्षति बहूत हुई।अनेक प्रयासों के बाद भी देश की अर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ।इसके फलस्वरूप अमीर अधिक समीर होते गए गरीब और शोषित ओर भी शोषण का

शिकार बन गये।आर्थिक विपन्नता और विषमता ने व्यक्ति के मन में असुरक्षा का भाव उत्पन्न किया।

सामाजिक स्थिति में आए इस बदलाव का सबसे अधिक प्रभाव परिवार और पारिवारिक संबन्धों पर पड़ा। पुराने मूल्य टूट गये और संयुक्त परिवारों का विघटन भी हुआ। उसके स्थान पर 'एक परिवार'व्यवस्था ने जन्म लिया है। अधिकाधिक भौतिक सुख एवं सुविधा प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य बनाया गया है ।महंगाई बढ़ती गयी।इन सब के कारण नारी को नौकरी के लिए घर से बाहर आना पड़ा।डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा का कहना है "नारी की स्थिति में सर्वाधिक परिवर्तन अर्थ के कारण हुआ।नौकरी और उत्तराधिकार ने उसकी स्थिति को बिलकुल बदल दिया।आर्थिक विवशता ने ही पारिवारिक मूल्यों को सर्वाधिक तोड़ा है।"[16] आर्थिक दबाव और विषमता का सबसे अधिक प्रभाव स्त्री पर पडा।धीरे –धीरे नारी में आर्थिक स्वावलंबन की भावना का जन्म हुआ।इसप्रकार वह कामकाजी नारी बन गई।घर के चार दीवारी की कैद में बंद नारी ने स्वयं प्रगति का द्वार खोल दिया है।नौकरी के लिए वह घर, परिवार और गांव द्वारा प्रदत्त सुरक्षा कवच तोडकर बाहर आयी है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में परिवार, आर्थिक स्थिति की दृष्टि से तीन विभागों में - उच्चवर्गीय परिवार ,मध्यवर्गीय परिवार और निम्नवर्गीय परिवार -विभाजित किया गया है।इसमें मध्यवर्गीय परिवार की नारी की स्थिति सबसे अधिक शोचनीय हो उठी है।उसे एक ओर परंपराओं एवं आदर्शों का पालन करना पड़ा है तो दूसरी ओर समाज की नवीन मनःस्थिति का भी सामना करना पड़ा है।आर्थिक विवशता से परिवार को बचाने केलिए, रोज़ी रोटी केलिए, पति की सहायता करने केलिए, बच्चों का पालन-पोषण केलिए मध्यवर्गीय परिवार की नारी को नौकरी करना पड़ा है। "भारत में स्वतंत्रता के बाद एक सबसे आधारभूत तथा दूरगामी सामाजिक परिवर्त न यह हुआ कि स्त्रियॉ अपनी परंपरागत जीवनचर्या से मुक्त हो गई और विशेष रूप से मध्यम तथा उच्च वर्गों की स्त्रियों ने जीविकोपार्जन के लिए ऐसे व्यवसायों में प्रवेश किया जिन पर अब

---

16 समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक संबन्ध: डॉ ज्ञानवती अरोडा, पृ. **18**।

तक मुख्यतः पुरूषों का एकाधिकार माना जाता था। इसके चलते उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया "।"[17]

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई।महान नेताओं के श्रम के फलस्वरूप स्वातंत्रयोत्तर काल में अनेक महिला पाठशालाएँ एवं महाविद्यालय खोले गए।अध्यापिकाओं के लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।तीसरी पंचवर्षीय योजना **1964** में आयोजित अखिल भारतीय महिला परिषद, **1964** में आयोजित कोठारी आयोग तथा **1963** के बाद के शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन आदि द्वारा महिला शिक्षा के क्षेत्र में प्रगती लाने के लिए अनेक सुझाव सरकार के सामने रखे गए।इन सभी के यत्नों के फलस्वरूप छात्राओं के लिए छात्रवृत्तियॉं, निशुल्क शिक्षा एवं पुस्तकें, स्वास्थ्य प्रशिक्षण आदि का प्रबन्ध हुआ।परिणामस्वरूप विद्यालयों में छात्राओं की संख्या बढी और अनेक स्त्रियों ने सफलतापूर्वक अपनी शिक्षा पूरी कर दी।"नारी अपनी स्वतंत्र पहचान और महत्ता चाहती है।शिक्षा और आत्मनिर्भरता ने उसे आत्मविश्वास दिया है।"[18]

शिक्षा द्वारा नारी में आत्मविश्वास बढा है और वह जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ रही है। नारी शिक्षा सामाजिक परिदृश्य में भी बहूत दूत गती से बदलाव लाया।परिणामत:घर ,परिवार व समाज की लक्ष्मण रेखा को पार करने केलिए नारी तैयार हो गयी। चूल्हे-चौके की घुटन को छोडकर, चहार दीवारी से वह बाहर आयी और पुरूष प्रधान क्षेत्रो में भी दृढनिश्चय के साथ पदार्पण भी किया।फलत: युग युगों से अभिवंदित अबला रूप भी, जो पुरूषों ने अपनी सुविधा के लिए बना रखा था, समाप्त हो गया।उसमें एक नया आत्मविश्वास और आत्मसम्मान जागृत हो गया। "आजादी के बाद आधुनिक शिक्षा के प्रचारप्रसार एवं विभिन्न सामाजिक

---

17 आजकल : मार्च **2008,** पृ. **30**।

18 मधुमती : फरवरी **1996,** पृ . **81**

आन्दोलनों के प्रभाव से मध्य तथा निम्नमध्यवर्ग तक की महिलाएँ विभिन्न सामाजिक तथा राजनीतिक संगठनों के माध्यम से अपने अधिकारों के मॉग के साथ आगे आयी है।"[19]

नौकरीपेशा होने से उसे आर्थिक सुरक्षा मिली और तद्वारा उसमें स्वावलंबन की भावना बढ़ गयी।परिवार तथा समाज द्वारा, व्यवहार और नैतिक धरातल पर बनाये गये कैद से वह मुक्ति पाती है और वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत भी बन गई।आज वह पुरूष के समान स्वतंत्र और उन्मुक्त जीवन बिताती है। "नारी-शिक्षा और शिक्षा के आधार पर प्राप्त नौकरियों ने आज नारी को एक आत्मविश्वास आर्थिक सुरक्षा और आर्थिक सक्षमता प्रदान कर उसे यह अनुभव दिया है कि वह किसी भी प्रकार पूरूष से हीन नहीं है।इसलिए आज पुरूष और महिला कथाकारों की नारी अपने व्यक्ति स्वतंत्र्य केलिए संघर्ष करती सम्मुख आती है।" [20] ।

"सदियों से पुरूष ने स्त्रियों की शरीरिक कमज़ोरी का लाभ उठाकर उन्हें अपने अधीन में रखा। स्त्रियों का शारीरिक और मानसिक रूप में शोषण करने से रोकने केलिए संविधान द्वारा अनेक नियम बनाये गये हैं जिससे स्त्री को विभिन्न क्षेत्रों में अनेक अधिकार प्राप्त हुए हैं। जैसे हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम **1956,** हिान्दु दत्तक और भरण पोषण अधिनियम **1956** कर्म चारी राज्य बीमा अधिनियम **1948,** प्रसूती लाभ अधिनियम **1961,** उपादान संदाय अधिनियम **1972** और समान काम के लिए समान वेतन अधिनियम **1976**।"[21] लगभग **1950** तक पुरूषों को दूसरा या तीसरा विवाह करने का अधिकार प्राप्त था।**1955** में संसद में हिन्दु मैरिज एक्ट पास हुआ।इस अधिनियम के अनुसार एक पत्नी के साथ रहते वक्त पुरूष के लिए दूसरा विवाह

---

19 अक्षरपर्व : मार्च **2006** , पृ. **23**

20 समकालीन कहानी ः युगबोध का संदर्भ :डॉ. पुष्पपालसिंह, पृ. **149**

21 भारतीय नारी ः दशा और दिशा : आशाराणी व्होरा, पृ. **122**।

निषिद्ध बनाया गया।नारी को जुडिशियल सेपेरेशन और तलाक की अनुमति मिल गई।इसके फलस्वरूप स्त्रियों को पुरूषों की मनमानी के विरूद्ध कानूनी सुरक्षा मिल गई।**1956** के हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम के बल पर पहली बार स्त्रियों को आर्थिक अधिकार मिला।इसप्रकार स्त्री-पुरूष के बीच समानता लाने में कानून ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।इस अधिनियम के अनुसार विरासत की संपत्ती पर पुत्रों के समान पुत्री को भी समान अधिकार प्राप्त है।**1956** के हिन्दु दत्तक और भरण पोषण अधिनियम से स्त्रियों को ओर भी संवैधानिक संरक्षण मिल गया।इसके अनुसार पत्नी की संतानहीन होने की स्थिति में कानून से सुरक्षा मिली तथा विधवा को भी संतान गोद लेने का अधिकार मिल गया। सन् **1986** में भारत की संसद द्वारा पारित महिलाओं का आशिष्ट रूपण निषेध अधिनियम के अनुसार कोई व्यक्ति किसी ऐसे विज्ञापन का प्रकाशन न तो करोगा और न ही करायेगा कि स्त्री की आकृति उसके रूप या शरीर अथवा उसके किसी भाग का अल्पीकृत करने या महिलाओं के चरित्र को कलंकित करे।

साठ के बाद की नारी

हिन्दुस्तानी लोगों ने स्वतंत्र भारत के बारे में जो रंगभरे सपने देखे थे उनमें से अधिकांश स्वप्न अब भी, स्वतंत्रता प्राप्ति के साठ वर्ष के बाद भी, स्वप्न मात्र रह गए हैं। आज यहाँ की राजनीतिक व्यवस्था बिलकुल भ्रष्टाचारपूर्ण हो गई है।संसद से सड़क तक के अधिकांश नेताओं में भ्रष्टाचार व्याप्त है।आज की राजनीति में नेता लोग गुंडा संस्कृति का पोषक बन रहे हैं अर्थात राजनीति में शरीफ और गुंडे का अन्तर मिट गया है।इसके फलस्वरूप सभी स्थानों पर अत्याचारों एवं कुरीतियों का तांडव हो रहा है।प्रतिदिन होनेवाले हड़तालों और बन्दों के फलस्वरूप सार्वजनिक जीवन ही बन्द हो जाता है। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला है।

शिक्षा द्वारा जागृत आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास के कारण साठ के बाद की नारी घर की चहारदीवारी से निकलकर समाज सेवा के क्षेत्र में कूद पडी है।उसने सदियों पुरानी दीवारों को तोड़कर विद्रोह अपने ही घर से शुरू किया है। फिर भी नारी को आज अनेक प्रकार की विसंगतियों का सामना करना पड़ता है। सुरेश बत्रा के शब्दों में "यह सच है कि परिवर्तित

सामाजिक. आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा, रोज़गार के अवसरों और समानता के अधिकारों में काफी वृद्धि हुई है किन्तु फिर भी प्रतिगामी नैतिकताओं. मान्यताओं. मूल्यों और सामाजिक मानसिकता के कारण अनेक विसंगतियों ने नारी जीवन पर दोहरे मानदण्डों को लागू किया हुआ है। एक भयंकर सामाजिक रोग की भॉती कानून और अंधविश्वासों की दोहरे शिकंजों ने नारी मन को आहत भी किया है और विद्रोही भी बनाया है। "[22]

साठ के बाद विश्व स्तर पर अनेक महिला संघटनों की स्थापना की गई। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से **1975** को 'महिला वर्ष' घोषित किया गया। **1975** में मेक्सिको में और **1980** में कोपनहेगन में 'विश्व महिला सम्मेलन' आयोजित किए गये। इन सभी के कारण सारे विश्व का ध्यान महिला संबन्धी समस्याओं की ओर आकर्षित हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देश पर महिलाओं का विकास करने के लिए भारत सरकार ने **1971** में जॉच आयोग का गठन किया था।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में उठी नारी जगृति ने नारी मुक्ति को अभियान को जन्म दिया। स्वतंत्रता के बाद की बदली हुई परिस्थितियों में विवाह,प्रेम, यौन संबन्धी नारी की भावनाओं .विचारों एवं समाज की स्त्री चरित्र की नैतिकता संबन्धी परंपराओं तथा धार्मिक विश्वासों के प्रति दृष्टिकोण में बडा परिवर्तन दिखाई देता है। इस दृष्टिकोण ने सदियों से स्थापित भारतीय नारी के जीवन मूल्यों को चुनौती दी है। साठ के बाद की नारी पति को भगवान मानने को तैयार नहीं है। शिक्षित नारी ने लिंग भेद के नाम पर होनेवाले इस अत्याचार का घोर विरोध भी किया है। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्मिता की पूर्णता प्राप्त करने केलिए नारी जीवन के विशिष्ट अधिगुणों का नाह -नूह भी करना शुरू किया है। "आजादी के बाद स्त्री ने मॉ होने की अनिवार्य ता से इन्कार करना आरम्भ कर दिया हैं। परिवार. पिता. पति. पुत्र की सुर्ख मरीचिका को स्त्री ने

---

22 मधुमती : फरवरी **1996**, पृ. **78**

समझने का दावा किया है।बच्चों को अपने व्यक्तित्व के विकास की बाधा अनुभव करती है आज स्त्री।स्त्री ने माँ न बनने को अपनाया है।माँ होकर भी मातृत्व की परंपरित भावना से अपने को मुक्त किया है।बच्चे 'केच' में पल रहे हैं।खासतौर से अपने अह्म के प्रति सचेत स्त्री ने बच्चे के प्रति एकान्त जिम्मेदारी को निभाने से इन्कार करना सीख लिया है।" [23]

आठवें दशक के बाद

आठवें दशक के बाद की नारी परंपराओं से मुक्त होकर अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी के बारे में सोचने का प्रयास करती दीख पड़ती है । पतिव्रता जैसे नारे के विरूद्ध वह आक्रोश करना शुरू करती है।जिन्दगी भर पति के साथ खुश और एकनिष्ठ रहने को वह अनिवार्य न मानती है। पति तथा सहवर्तित अन्य पुरूषों की मन ही मन तुलना करनेवाली स्त्री इस काल में सामने आती है। नारी ने कदम-कदम पर स्वयं को हर क्षेत्र केलिए कुशल सिद्ध किया है ।चाहत के अनुसार जीवन बिताने के लिए अक्षीण यत्न भी करती है वह।प्रस्तुत काल में नारियाँ स्वतंत्रता के पूर्व दशक की तरह भयावह,दिशाहीन और अंतहीन नहीं है।सामाजिक नैतिक बन्धनों से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन बिताने के लिए लालायित भी है। वैश्वीकरण के इस युग में नारी की प्रवृत्ति अहं से युक्त स्वार्थपूर्ण तथा आत्मकेन्द्रित हो गयी है।औद्योगीकरण और यांत्रिकीकरण के इस युग में वह समाज में अपना स्थान पाना चाहती है। आठवें दशक में वह साबित करती है कि वह मात्र देह नहीं बुद्धि भी है। "सदियों से नकारात्मक रवैया पाते रहने के कारण स्त्री एक स्वतंत्र इकाई के रूप में समाज में अपना स्थान पाना चाहती है ।वह अपने भीतर के भय और हीन भाव से निकलकर समाज विकास की मुख्य धारा से सकिय रूप से जुड़ना चाहती है।"[24]

---

[23] वर्तमान साहित्य शताब्दी कथा विशेषांक, जनवरी - फरवरी 2000,पृ. 449।

24 मधुमती : फरवरी. 1996,. पृ. 78।

नवें दशक के बाद

इस काल में नारी मुक्ति आंदोलन से प्रभावित नारी अधिक सक्षम और दृढ़ दीख पड़ती है। आत्मविश्वास से भरकर वह अपने अधिकारों और समकक्ष स्थान केलिए घर के अंदर और बाहर भी लडती है।

"बीसवीं सदी को 'महिला जागरण का युग' कहा जाता है। महिलाओं के संगठित आन्दोलन हर दिशा में हो रहे हैं। अपने नागरिक अधिकारों केलिए वे लड़ रही हैं। समाज और परिवार में सुरक्षित स्थिति केलिए, रोज़गार और आत्मनिर्भरता केलिए, महिला कर्मचारियों की आर्थिक सुरक्षा केलिए कानून पास करवाए जा रहे हैं। "[25]

समसामयिक युग में

समसामयिक युग में नारी अपने अधिकारों और शक्तियों के प्रति सजग हो रही है। परिणामतः परिवार में और समाज में उसकी भूमिका बदल रही है। नारी की वैचारिक भावभूमी में भी इस युग में परिवर्तन आ गया है। नारी ने अपनी अस्मिता के लिए लंबी लडाई लडी है। विद्रोह और विरोध का स्वर नारी मुक्ति आन्दोलन के रूप में अक्रोशात्मक रहा है। "नवीन उपलब्ध स्वातंत्रय भावना ने नारी को अपनी अस्मिता को पहचानने की शक्ति दी। फलस्वरूप नारियों में अपने 'स्व'के प्रति गहरी आस्था जन्म लेने लगी। "[26]

---

25 नारी शोषण ःआइने और आयाम : आशारानी व्होरा, पृ. **239** ।

[26] हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी के बदलते स्वरूप :डा. सुधा बालकृष्णन पृ . **124**

वह कदम-कदम पर स्वयं को हर क्षेत्र में कुशल सिद्ध करती रहती है। समाज ,शिक्षा और संस्कृति में परिवर्तन होने के कारण नारी जागृत होने लगी है।नारी में नारी चेतना का विकास तेजी से होने लगा है।नारी अब स्वतंत्रता, समता और बन्धुत्व की भावना से जागृत होकर मानविकता के विकास में योगदान देना चाहती है।पर आज भी नारी का अधिकांश भाग पुरूष के अधीन हैं। "वर्तमान युग में पुरूष के समान नारी को भी सम्मान और अधिकार देने के पक्ष में कई प्रावधान किये गये हैं।किन्तु आर्थिक परतंत्रता के कारण नारी समाज का अधिकांश भाग शोषण एवं अत्याचार का शिकार होने लगा है।"[27]

उत्तराधुनिक युग में नारी की स्थिती

आधुनिक नारी पारिवारिक और सामाजिक बन्धनों को तुच्छ मानकर हर क्षेत्र में पुरूष के कंधे से कंधे मिलाकर काम कर रही हैं।आज उसके आंचल में दूध तो है पर आंखों में सिर्फ पानी नहीं अस्मिता और प्रत्याशा है । "हौसलों पर प्रतिबन्धों की लगातार चोटों को झेलते हुए अपने ही उपक्रमों से वर्जित कार्यक्षेत्रों में भी पुरूष वर्चस्विता को खंडित करनेवाली चेतनापूर्ण नारी प्रतिभा दक्षता. त्वरित निर्णय क्षमता को सिद्ध करते हुए अपनी साहसपूर्ण उपस्थिती रेखांकित कर रही है।" [28] उत्तर आधुनिक युग में वह अपनी अस्मिता की तलाश कर स्वाभिमान पूर्ण जीवन जीने लगती है। "उत्तर आधुनिक स्त्रीवादी जीवन दर्शन ने स्त्री में स्वतंत्र सोच और पुरूष की बराबरी की व्याख्या को जाग्रत किया है।"[29] ।उत्तराधुनिक युग की नारी हर क्षेत्र में अपने को सक्षम सिद्ध कर चुकी है।वह अपनी अस्मिता को पहचानकर दुनिया को सही रास्ते से आगे

---

27 दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा: सितंबर **2004,** पृ. **28**

28 आजकल : मई **2001,** पृ. **6**

29 आजकल: मई **2008,** पृ. **33**।

बढाने का उत्तरदायित्व निभाती है। "अब वे सिर्फ नौकरियॉ ही नहीं कर रही हैं बल्की समाज को दिशा भी दे रही हैं। आज के दिनों में वे स्वतंत्रता की मांग ही नहीं कर रही हैं बल्की बड़े शहरों में स्वतंत्रता का उपभोग भी कर रही है।"[30]

स्त्री कितने आगे बढना चाहती है, स्वार्थी और विरोधी पुरूष लोग उसे उतना अपमानित कर पीछे हटाने का कुटिल श्रम भी करता है। आज भी नारी को परंपरागत मान्यताओं तथा नैतिक मूल्यों के नाम पर कुचलकर अपनी अधीन में रखने केलिए पुरूष लोग हीन श्रम करते हैं। पर उसे पराजित नहीं कर सकेगा "आज की स्थिति तो परिवर्तित हो गयी है। नारी पहले जैसे आज गुलामी की यातना नहीं सह सकती क्योंकि आज की नारी पहले की अपेक्षा आर्थिक रूप से सुरक्षित हो चुकी है। इस कारण उसे परंपरागत नारियों के समान दमन यंत्र में पिसा जाना स्वीकार नहीं। आधुनिक शिक्षित समाज में पति पत्नी कोई एक दूसरे के अधीनस्त नहीं हैं और न ही उनका सहयोग एक तरफा होता है।"[31]

नारी के बारे में प्रमुख व्यक्तियों का चिंतन

"पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।।"[32] ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की राय में " स्त्री को अबला कहना उसकी मानहानि करना है; यह पुरूष का स्त्री के प्रती अन्याय है। यदि बल का अर्थ पशुबल है, तो बेशक स्त्री पुरूष से कमजोर है, क्योंकि उसमें पशुता कम है। लेकिन अगर बल का अर्थ नैतिक बल है तो स्त्री पुरूष से बेहद ऊँची है। क्या उसकी सहज बोध की शक्ति पुरूष से अधिक नहीं है ?। क्या

---

30 आजकल : मार्च **2008,** पृ **31**

31 हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी के बदलते स्वरूप : डा. सुधा बालकृष्णन, पृ . **130**

32 मनुस्मृति : सं. गंगानाथ झा,पृ. **242**

उसकी सहिष्णुता और उसका साहस पुरूष को पीछे नहीं छोड़ देते उसके बिना पुरूष की हस्ती ही संभव नहीं हो सकती थी। अगर अहिंसा हमारे जीवन का धर्म है, तो भविष्य स्त्री के हाथ में है।"[33]

श्रीमती. इन्दिरा गॉधी अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष **1975** के अवसर पर प्रसारित संदेश में कहती है कि "अनंत काल से नारी को केवल शोभा और प्रदर्शन की वस्तु के रूप में चर्चा होती रही है। जब भी उसने इस घेरे से बाहर आने की कोशिश की, उसे उपहास और व्यंग्य का पात्र बनना पड़ा।

भारत में नारी की स्थिति विरोधाभासपूर्ण रही है। परंपरा से नारी को शक्ति का रूप माना गया है। किन्तु आम बोलचाल में उसे अबला कहा जाता है। महाकाव्यों में और प्राचीन इतिहास की पुस्तकों में हमें नारी की शक्ति और महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में पढ़ने को मिलता है। स्पष्टत: ये कुछ अपवाद रहे। लंबे मध्यकालीन युग में नारी का दर्जा कम होता गया और उसे अधिकाधिक कठिनाईयों तथा बर्बर रीति रिवाजों का शिकार होना पड़ा। धर्म और दर्शन ही ऐसे क्षेत्र रहे, जिनके माध्यम से उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। पिछली शताब्दी के दौरान कई विशिष्ट व्यक्तियों ने नारी के हितों के लिए लड़ाई लड़ी। हमारे स्वतंत्रता संग्रम के दौरान महात्मा गांधी के नेतृत्व में और जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य नेताओं के प्रबल समर्थन से भारी संख्या में महिलाओं ने इस संग्राम में भाग लिया और बलिदानों व कठिनाइयों की भागीदार बनीं। उनका उत्साह और आत्मविश्वास आश्चर्यजनक था। सिद्वांतः नारी ने समानता के अधिकार की लड़ाई जीत ली थी। आज़ादी के बाद उसे हमारे संविधान का अंग भी बनाया गया। किंतु व्यवहार में स्थिती पूर्णतः भिन्न है। भारतीय महिलाएं राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में विश्व के अन्य देशों की महिलाओं की तुलना में कहीं अधिक सक्रिय है पर विचारों और वास्तविकता के बीच एक दीवार खड़ी है। दीर्घकालिक सामाजिक कुरीतियों और पुरूषत्व के बारे में गलत धारणाओं की दीवार। गरीबी का बोझ कमज़ोर वर्गों के लोगों पर ही ज्यादा पड़ता है। नारी

---

[33] यंग इंड़िया ,**10- 4 -1930**।

स्वातंत्र्य या समानता हमारे सामान्य विकास कार्यक्रमों का अंग है परन्तु सरकारी कार्यवाही तब तक न तो कारगर और न ही पर्याप्त सिद्व होगी जब तक की महिलाएं स्वयं अपने अधिकारों और संबद्व दायित्वों के प्रति जागरूक नहीं होगी।नारी स्वतंत्रता भारत के लिए विलासिता नहीं है, अपितु राष्ट्र की भौतिक वैचारिक और आत्मिक संतुष्टि के लिए अनिवार्य बन गई है ।"

"खुबसूरत शरीर से बडा औरत का और कोई गुण नहीं होता ।"[34]

"यहॉ तक कि सारा जीवन पति के साथ काटने के बावजूद पत्नी की शरीरिक आवश्यकता की बात सुनने की सोच अभी तक पुरूष को नहीं आई है।इच्छा तो केवल पुरूष की होती है,औरत के लिए तो ऐसा सोचना भी पाप है।चाहे पति कितना पढा लिखा क्यों न हो यही सोच प्रमुख है।पुरूष का एकाधिकार जब टूटने लगता है, तब ऐसी द्वंद्वात्मक मानसिकता उपजती है।" [35]

रमेश बक्षी ने लिखा है "पत्नी का अर्थ केवल इस देश में ही खाने पकाने वाली औरत और लीगलइज़्ड प्रास्टिच्यूड हैं।"[36]

मेहरून्निसा परवेज़ के शब्दों में "औरत का जीवन कच्ची मिटटी की तरह होता हैं फिर बिखेरो फिर समेटो ;जिस शक्ल में चाहो गूंथ लो, गढ़ लो ढाल लो।"[37]

ओशो के अनुसार "स्त्री के बिना पुरूष एकदम अधूरा है।स्त्री में एक तरह की पूर्णता है... स्त्रैण अस्तित्व बहूत पूर्ण है, सुडौल है।वर्तुल पूरा है।"[38]

चित्रा मुदगल की राय में "स्त्री को अनुभव हो रहा है कि पूरक पक्ष होकर भी वह दूसरे पक्ष की केवल दासी है।"[39]

---

34 वह आया था : कुसुम अंसल, पृ. **125**

[3 5] साक्षात्कार: दिसम्बर **2005**, पृ. **20**

36 टुकड़े टुकडे : रमेश बक्षी,पृ. **42**

37 सोने का बेसर: मेहरून्निसा परवेज़, पृ. **21**

38 ओशो टाइम्स इंतरनेशनल : ओशो ,**1** मार्च **1997** ,पृ. **13**

39 नया ज्ञानोदय पत्रिका जुलाई पु **43**

नासिरा शर्मा के मत में "पारिवारिक व्यवस्था में स्त्री के समक्ष यह अजीब सी त्रासदी है कि यदि वह अधिकार लेती है तो रिश्ता छूटता है और रिश्ता रखती है तो अधिकार छूट जाता है।"[40]

मृदुला गर्ग लिखती है "नारीवाद का अर्थ क्या है...हर स्त्री की उसकी अपनी परिभाषा है। मेरी समझ में नारीवाद में दों तीन बातों को जोडा जा सकता है। पहली बात यह कि स्त्री की प्रचलित छवी का आकलन करना उस पर प्रश्नचिह्न लगाना और उसे दुबारा समझने की कोशिश करना। दूसरी बात कि किसी परम्परा को स्वीकार या अस्वीकार करने केलिए अपनी बुद्धि और अपने विवेक का प्रयोग करना।"[41]

"पुरूष सत्तात्मक समाज में स्त्री बेआवाज़ थी. गूँगी थी उस समाज में उसके बारे में जो कुछ भी कहा जा रहा था वह 'हिज़ स्टोरी थी' 'स्त्री गाथा' नहीं। अब ऐसा नहीं रहा । 'राम पाठशाला जा' के साथ साथ 'राधा भी पाठशाला जाने' लगी है वह बोलना सीख रही है और अपनी भाषा गढ़ रही है ।खुद को अभिव्यक्त कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर रही है।

नारी ने कुछ करने की ठान ली तो वह करके ही शांत होती है। अगर वह चाहे तो प्रगति के हर सोपान पर केवल नारी ही होगी। इसलिए नारी को नारायणी कहा गया है क्यों कि नारी केवल नींव की ईंट बनती है। एक सफल पुरूष के पीछे एक नारी का ही हाथ होता है। क्योंकि पुरूष की बुनियाद नारी है।" [42]

श्री विष्णु प्रभाकर की राय में "मैं तो कहूँगा कि पूरे विश्व में ही नारी शोषण होता रहा है। रूस में एक कहावत थी कि 'तुम यदि अपनी पत्नी को ही नहीं पीट सकते और क्या

---

40 नया ज्ञानोदय पत्रिका : नासिरा शर्मा,जुलाई 2005, पृ. 44

41 नया ज्ञानोदय पत्रिका : मृदुला गर्ग,जुलाई 2005, पृ. 50

42 ताप्तीलोक : 15 अप्रैल 2007, पृ . 26

करोगे'। चीन में पैदा होते ही बच्ची के पंजे शिकंजे में जकड दिए जाते हैं। आफ्रीका में तो नारी को इतने गहने पहनाए जाते हैं कि उसकी गर्दन तक नहीं उठ सकती। यह सब नारी को बन्धन में ही रखने को ही तो उपाय हैं।"[43]

मालती जोशी के शब्दों में "समाज से चिटककर दूर खड़े होकर हम न समाज का भला कर पाते हैं न अपना। नारी को अपनी स्थिति मजबूत बनानी होगी पर उस केलिए घर छोड़ना ही एकमात्र पर्याय नहीं है। घर में ही अपना स्थान बनाना होगा अपनी अस्मिता को जागृत करना होगा दासी से स्वमिनी बनना होगा।"[44]

इस संदर्भ में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रथम स्थान प्राप्त कुछ प्रमुख भारतीय महिलाओं के नामोल्लेख उचित होगा।

1 श्रीमती प्रतिभा पाट्टील ः प्रथम महिला राष्ट्रपति।

2 श्रीमती इन्दिरा गॉधी ः प्रथम महिला प्रधानमंत्री।

3 श्रीमती सुचेता कृपलानी ः प्रथम महिला मुख्यमंत्री।

4 श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित ः प्रथम महिला राजदूत ,प्रथम राष्ट्र संघ अध्यक्षा।

5 श्रीमती सरोजनी नायडू ः प्रथम महिला राज्यपाल।

6 श्रीमती हंसा मेहता ः प्रथम महिला उपकुलपती।

7 कु. कल्पना चावला ः प्रथम महिला आकाश अवरोही।

8 अन्ना राजम ज्योर्ज ः प्रथम महिला आई. ए. एस।

9 श्रीमती किरण बेदी ः प्रथम महिला आई. पी. एस।

10 श्रीमती पी. टी. उषा ः एशियाड गेम्स में स्वर्णपदक पानेवाली प्रथम महिला धावक।

---

43 मधुमती : श्री विष्णु प्रभाकर,फरवरी **2005** ,पृ. **71-72**

44 साक्षात्कार : मालती जोशी, मार्च **2005**,पृ. **14**

11 श्रीमती कर्णम म्ल्लेश्वरी ः ओलिंपिक्स में तीसरा स्थान प्राप्त करनेवाली प्रथम भारतीय महिला।

12श्रीमती जानसी जेम्स ः प्रथम मलयाली महिला उपकुलपती।

13 भीकाजी कामा ः प्रथम महिला कांतिकारी।

14श्रीमती एनी बसैन्ट ः कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष।

15डॉ. मुत्तुलक्ष्मी रेडड़ी ः प्रथम महिला विधायक ।

16श्रीमती मार्गरिट कज़िन्स ः प्रथम महिला मताधिकार आन्दोलन की सूत्रधार।

17 तैयबा बेगम ः प्रथम मुस्लिम स्नातक महिला।

18 सुवर्णकुमारी देवी ः प्रथम महिला उपन्यासकार।

19 श्रीमती प्रतिभा आर्य ः प्रथम नेत्रहीन स्नातिका।

20 ए. ललिता ः प्रथम महिला इंजीनियर।

21 शान्ताराणी ः प्रथम महिला बैंक मैनेजर।

22 सुभाषिनी दासगुप्ता ः प्रथम महिला सेनाधिकारी।

23डॉ. विद्या कोठेकर ः प्रथम महिला नाभिकीय भौतिकी विद।

24 कु. आरती शाह ः प्रथम इंग्लिीश चैनल तैराक महिला।

25 श्रीमती सविता रानी ः अंतरीक्ष विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय कानून में प्रथम महिला।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता पूर्व काल हो या उत्तराधुनिक काल हो नारी तो हर युग में पुरूषों से भी आगे रहकर कार्य करती है।बस उसकी श्रेष्ठता को पुरूष लोग स्थान नहीं देता है।यही अधूरा कार्य अब नारी को करना है। किसी कार्य की असफलता में उत्तराधुनिक नारियॉ आंसु बहाने केलिए तैयार नहीं है।बल्कि अपनी ही अस्मिता पर आस्था रखकर आगे बढ़ती रहती है।